Table of Contents

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]

[illegible]

[illegible] 1398 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 120 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

चेतना और दार्शनिक विचार प्रकट होते हैं।

- धर्म के बाह्याडंबरों की आलोचना
- आत्मा और परमात्मा के विरह और मिलन के भाव
- अनुभव ज्ञान को शास्त्रीय ज्ञान से अधिक महत्व देना
- ईश्वर की एकता और निराकार स्वरूप में विश्वास

कबीर की कविताएँ सरल भाषा में गहरी मर्मस्पर्शी होती हैं जो जनमानस तक पहुँचती हैं।

कबीर की भाषा और साखी का स्वरूप

कबीर की भाषा पूर्वी जनपद की थी जिसमें अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी और पंजाबी भाषाओं के शब्दों का मिश्रण था। इसे 'पचमेल खिचड़ी' या 'सधुक्कड़ी' कहा जाता है।

- साखी का अर्थ: साक्षी (प्रत्यक्ष ज्ञान) का तद्भव रूप
- साखी का छंद: दोहा छंद (13 और 11 मात्रा के विश्राम से 24 मात्रा)
- संत संप्रदाय में अनुभव ज्ञान की महत्ता
- कबीर की साखियाँ जीवन के तत्वज्ञान की शिक्षा देती हैं

Prepzy

साखी के माध्यम से कबीर ने सरल और प्रभावशाली भाषा में जीवन के गूढ़ सत्य प्रस्तुत किए हैं।

कबीर की प्रमुख साखियाँ

कबीर की साखियाँ जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहन विचार प्रस्तुत करती हैं। यहाँ कुछ प्रमुख साखियाँ प्रस्तुत हैं:

- ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ। अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होइ।
- कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि। ऐसैं घटि घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहिं।

- □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□, □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□, □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□
- □□□□□□ □□ □□□□□ □□, □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□, □□□□ □□□ □□□□□
- □□□□ □□□□□□ □□ □□□, □□□□□ □ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□, □□□□ □□ □□□□ □□□□
- □□□□□ □□□□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□, □□□□□ □□□ □□□□□□
- □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□, □□□□□ □□□ □ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□, □□□□ □□ □□□□□ □□□□
- □□ □□ □□□□□□ □□□□□, □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□, □□ □□□ □□□□□ □□□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□

□□□□	□□□□
□□□□□	□□□□
□□□	□□□□□□
□□□□□□	□□□□
□□□ □□□	□□-□□ □□□ / □□-□□ □□□
□□□□□□	□□□□□ / □□□□
□□□□	□□□□
□□□□□	□□□□
□□□□□	□□□□
□□□□	□□□□□
□□□□	□□□□□
□□□	□□□□□
□□□□□□□	□□□□ □□□ □□□□□

□□□□□ □□ □□□□□

□□□□ 1 - □□□

- □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□?

- कबीर के गुरु कौन थे ?
- साखी शब्द का अर्थ क्या है ?
- कबीर की भाषा को किस नाम से जाना जाता है ?

स्तर 2 – मध्यम

- कबीर की कविता में सामाजिक चेतना कैसे प्रकट होती है ? उदाहरण सहित समझाइए।
- कबीर के अनुभव ज्ञान और शास्त्रीय ज्ञान के बीच क्या अंतर था ?
- साखी के छंद का वर्णन कीजिए।

स्तर 3 – कठिन

- "जब मैं था तब हरि नहीं , अब हरि हैं मैं नाँहि।" इस साखी का अर्थ और गहरा भाव समझाइए।
- कबीर की साखियों में अलंकारों का प्रयोग कैसे उनकी कविता को प्रभावशाली बनाता है ? उदाहरण सहित वर्णन करें।
- कबीर की सामाजिक और धार्मिक आलोचना उनके समय के संदर्भ में क्यों महत्वपूर्ण है ?

Prepzy

उत्तर कुंजी

स्तर 1 – सरल

- कबीर का जन्म काशी में 1398 में हुआ था।
- कबीर के गुरु रामानंद थे।
- साखी शब्द का अर्थ है 'साक्षी' अर्थात प्रत्यक्ष ज्ञान।
- कबीर की भाषा को 'पचमेल खिचड़ी' या 'सधुक्कड़ी' कहा जाता है।

स्तर 2 – मध्यम

- कबीर की कविता में सामाजिक चेतना उनके धर्म के बाह्याडंबरों की आलोचना और जनमानस की पीड़ा को व्यक्त करती है। उदाहरण के लिए , वे जाति-पांति और अंधविश्वास के खिलाफ थे।

- अनुभव ज्ञान वह ज्ञान है जो व्यक्ति ने प्रत्यक्ष अनुभव से प्राप्त किया हो , जबकि शास्त्रीय ज्ञान केवल पुस्तकों तक सीमित होता है। कबीर अनुभव ज्ञान को अधिक महत्व देते थे।
- साखी दोहा छंद में होती है जिसमें पहली पंक्ति में 13 मात्रा और दूसरी पंक्ति में 11 मात्रा होती है , कुल मिलाकर 24 मात्रा होती हैं।

स्तर 3 - कठिन

- इस साखी का अर्थ है कि जब मैं अहंकार में था तब ईश्वर का ज्ञान नहीं था , लेकिन जब अहंकार मिट गया तो ईश्वर का अनुभव हुआ। यह आत्मा और परमात्मा के मिलन का भाव है।
- कबीर की साखियों में अलंकार जैसे रूपक, उपमा , विरोधाभास आदि का प्रयोग उनकी बात को गहराई और प्रभावशीलता प्रदान करता है। उदाहरण के लिए , "कस्तूरी कुंडलि बसै , मृग ढूँढै बन माँहि " में रूपक का प्रयोग है।
- उनकी सामाजिक और धार्मिक आलोचना उस समय के धार्मिक पाखंड और सामाजिक अन्याय के खिलाफ थी , जो समाज सुधार के लिए आवश्यक थी।

Prepzy